अचानकमार – अमरकंटक बायोस्फियर रिजर्व – एक परिचय

डॉ. रूबी शर्मा*, डॉ. राजेश कुमार मिश्रा एवं डॉ. एन. रॉयचौधुरी

उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर

*पूर्व महिला वैज्ञानिक 'बी', अचानकमार-अमरकंटक बायोस्फियर रिजर्व के अन्तर्गत विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग की परियोजना, उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर

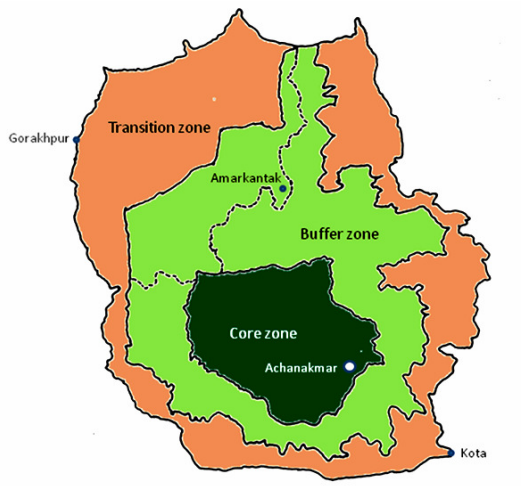

जैव विविधता को बढ़ावा देने के उद्देश्य से यूनेस्को के मानव एवं बायोस्फियर कार्यक्रम के तहत भारत सरकार के पर्यावरण व वन मंत्रालय द्वारा छत्तीसगढ़ के अचानकमार तथा मध्यप्रदेश के अमरकंटक क्षेत्र को 30 मार्च 2005 को प्रदेश का दूसरा तथा देश का 14 वां बायोस्फियर रिजर्व क्षेत्र घोषित किया । इस योजना का मुख्य उद्देश्य जैव विविधता से सम्पन्न क्षेत्रों, अद्भुत व प्रतिनिधित्व करने वाले पारिस्थितिक तन्त्र की पहचान कर उन्हें बायोस्फियर रिजर्व घोषित करना है।

अचानकमार-अमरकंटक क्षेत्र मध्यप्रदेश एवं छत्तीसगढ़ राज्य के बीच एक अन्तर्राज्यीय बायोस्फियर रिजर्व है । 3835.51 वर्ग कि.मी. में फैले इस बायोस्फियर रिजर्व का 31.90 प्रतिशत क्षेत्र मध्यप्रदेश में तथा शेष 68.10 प्रतिशत छत्तीसगढ़ राज्य में शामिल हैं। मध्यप्रदेश के दो जिले अनूपपुर में 16.20 प्रतिशत, डिण्डौरी में 15.70 प्रतिशत तथा छत्तीसगढ़ राज्य के बिलासपुर जिले में 68.10 प्रतिशत आता है । इस बायोस्फियर रिजर्व क्षेत्र के तहत म.प्र. के अमरकंटक पठार पर प्रचुर मात्रा में वनस्पतियां पाई जाती हैं। अमरंकटक पठार एवं अचानकमार घाटी विशेषत: औषधीय पौधों के विकास के लिए मानक पर्यावरणीय दशाओं से परिपूर्ण है । फर्न, आकर्डिस, ब्रायोफाइटस, शैवाल आदि अनेकों महत्वपूर्ण पेड़ -पौधे इस क्षेत्र में पाए जाते हैं । इसलिए इस क्षेत्र को इन दुर्लभ प्रजातियों का जीन बैंक कहा जाता है । अचानकमार–अमरकंटक बायोस्फियर रिजर्व देश का चौदहवां बायोस्फियर रिजर्व है। अचानकमार–अमरकंटक बायोस्फियर रिजर्व मध्य भारत में स्थित है। जो कि छत्तीसगढ़ एवं मध्यप्रदेश में 3836.5 कि0 मी0 तक फैला हुआ है। यह मैकल पर्वत श्रेणी से लेकर विंध्य व सतपुड़ा पर्वत श्रंखलाओं के जंक्शन तक

फैला है। इसका नाम यहॉ स्थित अचानकमार अभ्यारण के (यह जीव मंडल का कोर जोन है) तथा (अमरकंटक जो कि पवित्र नदियॉ नर्मदा, सोन तथा जोहिला का उद्‌गम स्थल है) के नाम पर रखा गया है। अमरकंटक, बायोस्फियर रिजर्व के बफर जोन के अंतर्गत आता है तथा यह हिन्दू, जैन व सिख समुदायों के लिए पवित्र स्थल है। यहॉ कई प्राचीन मंदिर जैसे नर्मदा मंदिर, शिव, सूर्यनारायण मंदिर, दुर्गा मंदिर, आदि स्थित है।

इस बायोस्फियर रिजर्व में निम्न प्रकार के उष्णकटिबंधीय पर्णपाती वन पाये जाते हैं। शीतोष्ण मिश्रित पर्णपाती वन, उष्णकटिबंधीय शुष्क पर्णपाती वन व शुष्क मिश्रित पर्णपाती वन व इसके अन्य प्रकार पाये जाते हैं।

जैव विविधता की दृष्टि से यह बायोस्फियर रिजर्व बहुत ही समृद्ध है। यहॉ विभिन्न प्रकार की वनस्पति का आवास है जिसमें सूक्ष्म व बड़े जानवर विचरण करते हैं। अभी तक 1527 प्रजाति की वनस्पतियों की पहचान की जा चुकी है। जिसमें 317 थैलोफाइट, 44 ब्रायोफाईट, 40 टेरिडोफाईट, 16 अनावृत बीजी व 1111 आवृत बीजी प्रजातियॉ हैं। बायोस्फियर रिजर्व में कुल 324 प्रजातियों के वन्य जीवों की पहचान की जा चुकी है। वन्य जीवों में बाघ, तेंदुआ, मौर, भालू, चीतल, घुटरी, जंगली बिल्ली, लोमड़ी, जंगली कुत्ता, नील गाय, सांभर, चौसिंघा आदि प्रमुखता से पाये जाते हैं।

बायोस्फियर रिजर्व में मुख्य रुप से साल वृक्ष हैं जिसमें बीच–बीच में अन्य प्रजातियॉ भी पायी जाती हैं । साल वृक्षों की अधिकता के कारण आद्र वातावरण निर्मित होता है जिससे की वर्षा भी अधिक मात्रा में होती है यह सब अन्य प्रजातियों के विकास में सहायक होते है। साल के साथ उगने वाली मुख्य सहायक प्रजातियॉ हैं – साजा, बीजा, धवा, कसई, लेंडिया आदि तथा कई प्रकार के झाड़ी, आरोही व छोटी शाकीय पौधे भी विकसित होते हैं। यहॉ पायी जानी वाली वनस्पतियों में 518 ऐसी प्रजातियॉ है जो कि भोजन, औषधीय व अन्य उपयोग की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। अतः बायोस्फियर रिजर्व यहॉ के निवासियों तथा पर्यटकों के प्राकृतिक, अध्यात्मिक व आर्थिक आवश्यकताओं को पूरा करता है।

प्रकृति एवं प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण हेतु कार्य कर अंतर्राष्ट्रीय संघ के द्वारा बायोस्फियर रिजर्व को संरक्षित क्षेत्र की पांचवीं श्रेणी में रखा गया है। इसका मुख्य उद्देश्य जैव विविधता संरक्षण, जैव विविध प्रजातियों की अनुवांशिक भिन्नता तथा प्राकृतिक अस्तित्व का बचाव एवं इनका सतत् उपयोग है। इसमें स्थानीय

जनसमुदाय के आर्थिक विकास में सुधार लाने के लिए उपयुक्त तकनीक का प्रयोग एवं जनसमुदाय को शिक्षण एवं प्रशिक्षण द्वारा आर्थिक एवं सामाजिक उन्नति में सहयोग प्रदान करना भी सम्मिलित है। अचानकमार-अमरकंटक बायोस्फियर रिजर्व योजना के तहत जैव विविधता के संरक्षण के साथ ऐसे विकास कार्य किए जाते हैं जो स्वपोषी होने के साथ-साथ वहां के रहवासियों को आवश्यक रोजगार एवं आर्थिक सहायता उपलब्ध करा सकें एवं साथ ही साथ जैव विविधता का संरक्षण भी हो सके।

संस्थान अचानकमार - अमरकंटक बायोस्फियर हेतु एक लीड इन्स्टीट्यूट के रूप में कार्य कर रहा है । अचानकमार - अमरकंटक बायोस्फियर रिजर्व के संबंध में विस्तृत जानकारी संस्थान की वेब साईट (http://tfri.icfre.org) पर उपलब्ध है । इच्छुक व्यक्ति अचानकमार - अमरकंटक बायोस्फियर रिजर्व के तहत संस्थान द्वारा कराये जा रहे कार्यों, चलाई जा रही परियोजनाओं एवं कराये जा रहे प्रकाशन के संबंध में जानकारी प्राप्त कर लाभ उठा सकते हैं। विश्व के 20 नए बायोस्फियर क्षेत्रों में 'अचानकमार-अमरकंटक बायोस्फियर रिजर्व' को शामिल करने से इस क्षेत्र में विश्व स्तरीय शोध व अंतरराष्ट्रीय पर्यटन की संभावनाएं बढ़ गई हैं। पेरिस में 9 से 13 जुलाई तक हुए मैन एंड बायोस्फियर प्रोग्राम (एमएबी) में अचानकमार बायोस्फियर को जोड़ने के बाद अब यह विश्वभर के बायोस्फियर क्षेत्रों के मानचित्र में अपनी पहचान बना चुका है।

अचानकमार बायोस्फियर अविभाजित मध्यप्रदेश के समय से देश और विदेश में जैव विविधता के स्वर्ग के रूप में जाना जाता रहा है। केंद्रीय वन एवं पर्यावरण मंत्रालय ने मार्च 2005 में देश के 14 वें बायोस्फियर के रूप में अचानकमार-अमरकंटक बायोस्फियर रिजर्व की घोषणा की थी, परंतु प्राचीनकाल से यह देवभूमि के रूप में विख्यात है। तीन पवित्र नदियों नर्मदा, जोहिल्या व सोन का उद्गम स्थल होने के कारण इस क्षेत्र की गिनती धार्मिक तीर्थ में होती है । इसके अतिरिक्त इसकी खास पहचान यहां पाए जाने वाले दुर्लभ जीव, जंतु, वनस्पतियां और जनजातियों से होती है। इसका भौगोलिक क्षेत्रफल 3835 वर्ग किलोमीटर है, जिसमें 551 वर्ग किलोमीटर का कोर एरिया, 3283 वर्ग किलोमीटर बफर व ट्रांजीशन जोन है। इसमें छत्तीसगढ़ के बिलासपुर व मरवाही वन

मंडल तथा मध्यप्रदेश के डिंडोरी व अनूपपुर वन मंडल शामिल हैं।

बायोस्फियर के अंतर्गत 16 वर्ग किलोमीटर का क्षेत्र माइक्रो क्लाइमेट सदियों से सुरक्षित है । मानव आबादी के विस्तार तथा जैविक दबाव के बावजूद इसका सुरक्षित रखना अनूठी बात है। एमएबी नेटवर्क में अचानकमार बायोस्फियर को शामिल करने के पीछे इसकी कई विशेषताओं में शायद यह प्रमुख विशेषता मानी गई होगी । अमरकंटक से केंवची तक 16 किलोमीटर की तलहटी का क्षेत्र पूरे देश में अपनी खास पहचान रखता है। दुर्लभ जटाशंकर पेड़ यहीं पाया जाता है । इसे अन्य क्षेत्रों में रोपने की कोशिश सफल नहीं हुई, क्योंकि अमरकंटक बायोस्फियर की भूमि, जलवायु की खासियत की वजह से ही जटाशंकर यहां उपजता है ।

अचानकमार बायोस्फियर के अंतर्गत बाघ, तेंदूआ, बाइसन, भालू, हिरण, चौसिंघा, चीतल सहित 325 प्रकार के वन्यप्राणियों का अनूठा संसार है । इसमें दुर्लभ उडऩ गिलहरी, काला तेंदूआ, माउस डियर आदि प्रमुख हैं । बायोस्फियर रिजर्व में 1527 पादप प्रजातियां पाई जाती हैं। इसमें 317 थैलोफाइट, 44 टेरिडोफाइट, 16 जिम्नोस्पर्म, 1111 एन्जिोयस्पर्म शामिल हैं । लहरदार पहाडिय़ां बायोस्फियर की शोभा में चार चांद लगाती हैं। साल, बांस, सागौन सहित लें डिया, कुसुम, जामुन, महुआ, आंवला, बेल, करी, तेंदू आदि मिश्रित प्रजाति के पेड़ों के घने जंगल हैं,जो गर्मियों में भी जंगल की आबोहवा को सदाबहार रखने में मदद करते हैं। रिजर्व के अंतर्गत सिंहावल

सागर, झंडी डोंगरी, रक्षा सार, टंगली पठार, कुंभी पानी आदि प्रमुख पर्यटन स्थल हैं । पूरे बायोस्फियर के अंतर्गत 238 राजस्व वन ग्राम सम्मिलित हैं, जिनमें लगभग 27 जनजातियों के लोग निवासरत हैं । इसमें बैगा, कोल, कंवर, प्रधान, गोंड़ आदि प्रमुख जनजातियां शामिल हैं ।

अचानकमार बायोस्फियर के अंतर्गत अनेक दुर्लभ औषधीय वनस्पतियां पाई जाती हैं । इनकी खोज में साधु-संत से लेकर वैद्य, वैज्ञानिक आदि पहुंचते हैं । इनमें दहीमन, जटाशंकरी आदि प्रमुख हैं । वैज्ञानिक खोजों के दौरान कुकुरमुत्ते की सर्वाधिक प्रजातियां यहीं पाई गईं हैं । जानकारों के मुताबिक कई जड़ी बूटियां ऐसी हैं, जो सिर्फ अमरकंटक में पाई जाती हैं । छत्तीसगढ़ एवं मध्यप्रदेश के इस संयुक्त बायोस्फियर के अंतर्गत किए जाने वाले शोध, दुर्लभ जीव जंतुओं, वनस्पतियों के विषय में जानकारी संग्रहित करने के लिए उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान (टीएफआरआई) जबलपुर को वैज्ञानिक जानकारी प्रबंधक बनाया गया है । यहां 28 प्रकार की दुर्लभ वनौषधियां पाई जाती हैं । इनमें कालमेघ, तेजराज, मलकानगिरी, हर्रा, मैडा, भृंगराज, जंगली प्याज आदि शामिल हैं।